भक्ति की महिमा

नवदेव पूज्यं लोके, पुण्य वर्धन हेतवे।
तेषाः आराधनाः कुर्यात्, विशद शैव प्रदायकः॥

नवदेव लोक में पूज्य माने गये हैं जो पुण्य वृद्धि में हेतु हैं उनकी आराधना विशद मोक्ष प्रदायी है जो अवश्य करने योग्य है। अनादि निधन जैन धर्म में भक्ति को मुक्ति का साधन माना गया है। मुक्ति के दो मार्ग कहे गये हैं - 1 तप मार्ग, 2 भक्ति मार्ग।

वर्तमान के दौर में व्यक्ति स्वयं को दुखी और असहाय मान रहा है इस स्थिति में लोगों के द्वारा प्रतिदिनि के आराध्य जिन निश्चित किए हैं उनके अनुसार लघु विधान करना चाहते हैं उनकी भावनाओं को देखते हुए लघु विधानों की रचना की गई जो लोगों को पसन्द आएगी एवं पूजा भक्ति करके पुण्यार्जन करते हुए विशद जीवन को मंगलमय बना सके इस भावना से प्रस्तुत है यह साप्ताहिक विधान संग्रह जो गुरुवर के आशीर्वाद का प्रसाद है। संघस्थ ब्र. आरती दीदी ने पुस्तक के कंपोजिंग में सहयोग प्रदान किया उनको हमारा मंगलमय आशीर्वाद।

ॐ नमः

आचार्य विशद सागर

कौशाम्बी, 4-5-2021

विनय पाठ (लघु)

(दोहा)

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं
पुष्पांजलिं क्षिपामि।

“परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ”

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं ।।

आप्तेन विशदो धर्मः, परोपकृतये शताम्।
गम्भीर ध्वनिनाऽ भाषिः, वर्ण मुक्तेन् निस्पृहम्।।

अर्थ - आप्त ने अपनी गम्भीर वाणी से निर्मल और जीवों के कल्याण हेतु धर्म का स्वरूप भव्य जीवों के कल्याण हेतु कहा है।

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु, विद्यमान विंशति जिन:, अनन्तानन्त सिद्ध, निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल-छन्द:)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शांतये शांतिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्यावली

(दोहा)

दोष अठारह से रहित, प्रभु छियालिस गुणवान।
देव श्री अर्हन्त का, करते हम गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिन के सर्वांग से, खिरे दिव्य ध्वनि श्रेष्ठ।
द्वादशांग मय पूजते, लेकर अर्घ्य यथेष्ठ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीजिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयाशा त्यागी रहे, ज्ञान ध्यान तपवान।
संगारम्भ विहीन पद, करें विशद गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीस विदेहों में रहें, विहरमान तीर्थेश।
भाव सहित हम पूजते, लेकर अर्घ्य विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विहरमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को नाशकर, के होते हैं सिद्ध।
पूज रहे हम भाव से, जो हैं जगत् प्रसिद्ध।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्त सिद्धेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में जो रहे, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिनकी अर्चा भाव से, करते यहाँ महान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस-छन्द)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।1।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।2।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।3।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।4।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।।5।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।6।।

दोहा - **अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।**
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - **देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।**
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजा

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु देव नव,विद्यमान जिन सिद्ध।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब जिन, भू निर्वाण प्रसिद्ध।।
सहस्त्रनाम दशधर्म शुभ, रत्नत्रय णमोकार।
सोलह कारण का हृदय, आह्वानन् शत् बार।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व देव शास्त्र गुरु, नवदेवता, तीस चौबीसी विद्यमान विंशति जिन, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धी, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सहस्त्रनाम, सोलह कारण, दशलक्षण, रत्नत्रय, णमोकार, निर्वाण क्षेत्रादि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी-छन्द:)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रुज विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय जलं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह गंध चढ़ाएँ, भव सागर से तिर जाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत के पुंज चढ़ाएँ, शाश्वत अक्षय पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

पुष्पित हम पुष्प चढ़ाएँ, कामादिक दोष नशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु यह रसदार चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

रत्नोंमय दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित यह धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे शिव फलदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय फलं निर्व.स्वाहा।

यह पावन अर्घ्य चढ़ाएँ, अनुपम अनर्घ्य पद पाएँ।
देवादि सर्व जिन ध्यायें, जिन प्रतिमा पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक श्री......सहित सर्व पूज्येसु श्रीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
हमको भी निज सम करो, कर दो यह उपकार।।

(शांतये शांतिधारा)

दोहा - पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
विशद भावना है यही, कर्म होंय निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा - जैन धर्म जयवंत है, तीनों लोक त्रिकाल।
गाते जैनाराध्य की, भाव सहित जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम का है अर्चन।।1।।
भरतैरावत ढाई द्वीप में, तीन काल के जिन तीर्थेश।
पंच विदेहों के तीर्थंकर, पूज रहे हम यहाँ विशेष।।2।।
स्वर्ग लोक में और ज्योतिषी, देवों के जो रहे विमान।
भावन व्यन्तर के गेहों में, रहे जिनालय महति महान।।3।।
मध्य लोक में मेरु कुलाचल, गिरि विजयार्ध है इष्वाकार।
रजताचल मानुषोत्तर गिरि तरु, नन्दीश्वर है मंगलकार।।4।।
रुचक सुकुण्डल गिरि पे जिनगृह, सिद्ध क्षेत्र जो हैं निर्वाण।
सहस्त्रकूट शुभ समवशरण जिन, मानस्तंभ हैं पूज्य महान।।5।।
उत्तम क्षमा मार्दव आदिक, बतलाए दश धर्म विशेष।
रत्नत्रय युत धर्म ऋद्धियाँ, सहसनाम पावें तीर्थेश।।6।।

दोहा - सोलह कारण भावना, और अठाई पर्व।
पंच कल्याणक आदि हम, पूज रहें हैं सर्व।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित वर्तमान भूत भविष्यत सम्बन्धी पंच भरत, पंच ऐरावत, पंच विदेह क्षेत्रावस्थित सर्व तीर्थंकर, नवदेवता, मध्य ऊर्ध्व एवं अधोलोक, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धित कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, गर्भ जन्म तप केवलज्ञान निर्वाण भूमि, तीर्थ क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, दशलक्षण, सोलहकारण, रत्नत्रयादि धर्म, ढाई द्वीप स्थित तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिवरेभ्यो सम्पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - जिनाराध्य को पूजकर, पाना शिव सोपान।
यही भावना है विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

देव–शास्त्र–गुरु की आरती

(तर्ज - ॐ जय देव.....)

ॐ जय देव शास्त्र गुरुवर, स्वामी देव शास्त्र गुरुवर।
आरती करें तुम्हारी-2, दीपक शुभ लेकर।।
ॐ जय देव शास्त्र।। टेक।।

प्रथम आरती देवश्री जो, अर्हत् कहलाए-स्वामी...।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी-2, परम शुद्ध गाए।।
ॐ जय..... ।।1।।

जिनवाणी कल्याणी है जो, जग माता गाई-स्वामी...।
पढ़ें सुने ध्याने वाले की-2, बुद्धि बढ़े भाई।।
ॐ जय..... ।।2।।

आचार्योपाध्याय साधु दिगम्बर, गुरुवर कहलाए-स्वामी...।
मोक्ष मार्ग के राही अनुपम, गुरुवर ये गाए।।
ॐ जय..... ।।3।।

देव शास्त्र गुरु की जो प्राणी, आरति यह गाए-स्वामी...।
'विशद' सौख्य पाके इस जग के-2, शिव पथ अपनाए।।
ॐ जय..... ।।4।।

श्री पार्श्वनाथ विधान

माण्डला

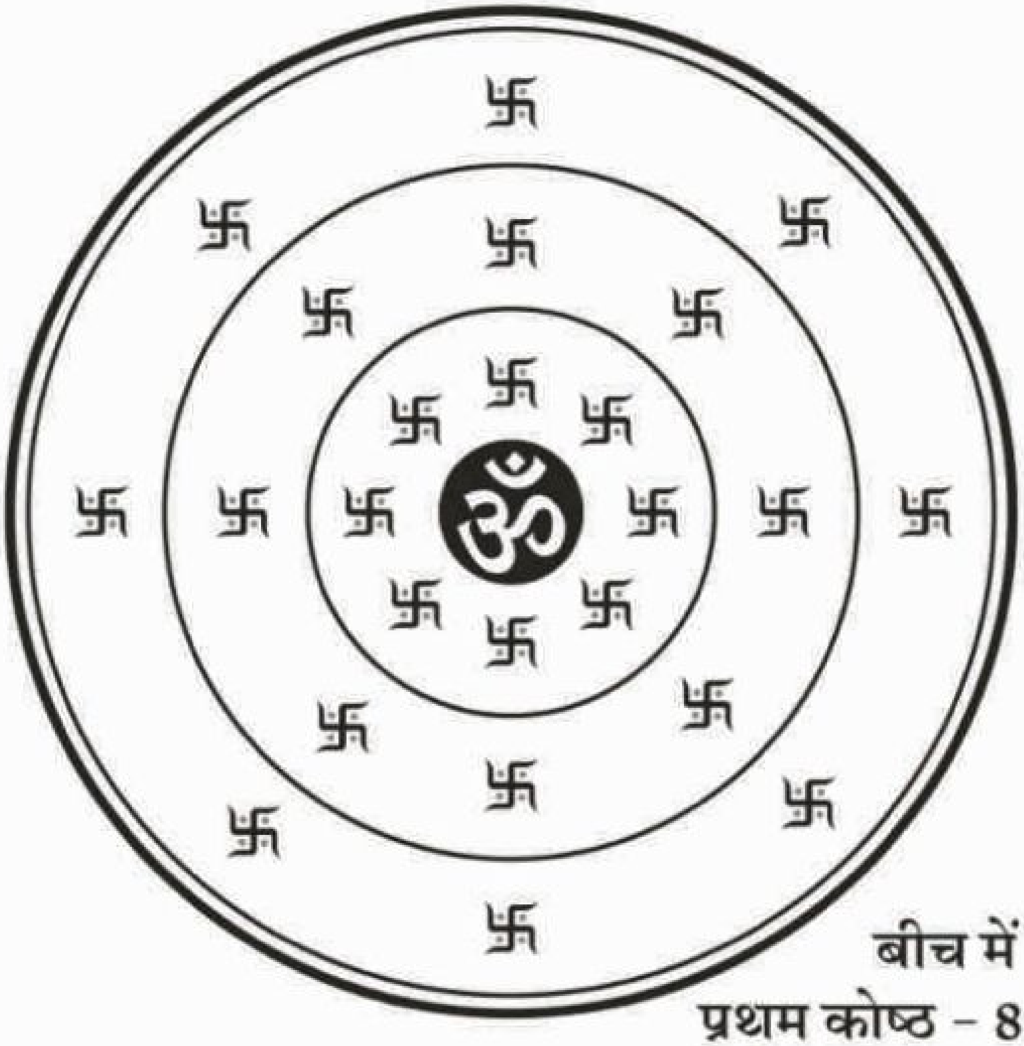

बीच में – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ – 8 अर्घ्य
कुल – 24 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

(अनुष्टुप छन्द)

विश्वसेनसुतः पार्श्वः, 'विशदज्ञान' धारकाः।
सर्वसहा मतिर्-मे स्यात्, तावद्यावत् शिवो न हि।।1।।

(उपजाति छन्द)

परीषहैर् - वातकृतैस्तदासौ महामनाधीर - गंभीरपार्श्वः।
अकम्पचित्तः कनकाचलो वै ! तं पार्श्वनाथं त्रिविधं प्रवंदे।।2।।
पुण्यप्रभावाद् विचलासनाच्च, यातः फणीन्द्रश्चकितः सभार्यः।
फणातपत्रै-रुपसर्गकाले, भक्तिं व्यधात् यस्य नमोऽस्तु तस्मै।।3।।
श्रीपार्श्वनाथः स्वपरात्मविज्ञः, श्रेणीं श्रितः स्वात्मजशुक्लयोगैः।
घातीनिहत्वा जगदेकसूर्यः, कैवल्यमाप्नोत् तमहं स्तवीमि।।4।।
माणिक्य-गारुत्-मणिरत्नगर्भैः, वैडूर्य मुक्तामणि हीरकाद्यैः।
शक्राज्ञया वृत्तसभां जिनस्य, आकाशमध्ये व्यतनोद् धनेशः।।5।।
श्रीपार्श्वनाथस्य नमोऽस्तु तुभ्यं, त्रैलोक्यनाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं।
अभीप्सतार्थाद नमोस्तु तुभ्यं, त्रैलोक्य नाथाय नमोस्तु तुभ्यं।।6।।

(अनुष्टुप छन्द)

जित्त्वा महोपसर्गान्यो, ज्योतिर्-देव कृतान् भुवि।
पार्श्वनाथं नमस्यामि, विश्व विघ्नौघ-शान्तये।।7।।

श्री पार्श्वनाथ पूजा विधान (लघु)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो !हे पार्श्व प्रभो !, हे पार्श्व प्रभो करुणाधारी।
हे विघ्न विनाशक शांतीकर, महिमा महान मंगलकारी।।
हम भाव सहित ध्याते उर में, हे प्रभो ! हृदय में आ जाओ।
हम भक्त आपके अज्ञानी, ना हमें प्रभु जी विसराओ।।

दोहा - भवसागर में डूबते, हमको दो आधार।
आह्वानन् करते हृदय, हे जिन ! बारम्बार।।

ॐ ह्रीं सर्व संकटहारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय-छन्दः)

हो कर्म के फल से जन्म मरण, पर असमय मरण कहे खोटे।
निज मात स्वजन के आँसू बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हो तकरार भयंकर जलते, आपस में प्राणी जिससे।
है भवाताप अन्तर उर में, भव-भव में जलते हैं इससे।।

जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर संयोग जगत् के, उनको हमने निज माना।
हम मुट्ठी बाँध के आये हैं पर, हाथ पसारे ही जाना।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काँटों से जो बचते हैं वे, फूल कभी ना पाते हैं।
सम्यक् जो पुरुषार्थ करें ना, मोक्ष कभी ना जाते हैं।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मौज उड़ाते भोजन कर ज्यों, अगर बुराई त्यों खोयें।
रोग व्याधियाँ पाप नशें सब, बीज पुण्य के हम बोयें।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को हम ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जलाकर आरति करके, रात अंधेरी ना हटती।
पर श्रद्धा के दीप जलाएँ, कर्मों की होवे घटती।।

जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकर धूप जगत महकाए, दुर्गन्धी का नाश करे।
आतम सौरभ में जो खोए, सिद्धशिला पर वास करे।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम बदलेंगे युग बदलेगा, हर मुश्किल का हल पाएँ।
जो भी जैसा आज करेंगे, कल वैसा ही फल पाएँ।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, जिसका कोई मूल्य नहीं।
अटक रहे हैं जो कीमत में, वे पाते ना ठौर कहीं।।
जन्म मरण की पीड़ा हरने, पार्श्वप्रभु को ध्याते हैं।
तीन योग से श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांतिप्रदायक लोक में, जिनवर शांतीकार।
जिनके चरणों में विशद, देते शांतीधार।।

(शान्तये शान्तिधारा)

दोहा - राही मुक्ती मार्ग के, मुक्ती के दातार।
पुष्पांजलि करते चरण, नत हो बारम्बार।।

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा-छन्द)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाएँ माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौष वदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौष वदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - पाप नरक का मूल है, पुण्य की जड़ पाताल।
शिवपद राही पार्श्व जिन, की गाते जयमाल।।

तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ......

श्री पार्श्वनाथ भगवान, करें गुणगान, सभी मिल भाई ।
जीवों को शांति प्रदायी।।टेक।।
जिनवर जग में हितकारी हैं, जो अतिशय करुणाधारी हैं।
जिनकी महिमा इस जग में है हितदायी।।
जीवों को शांति प्रदायी।।1।।
जो पार्श्वनाथ जिन को ध्याये, उसकी हर बाधा टल जाए।
जिन अर्चा कर, जीवों ने मुक्ती पाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।2।।

हो भूत प्रेत की बाधाएँ, कोई शोक व्याधियाँ जो आएँ।
ज्वर कुष्ट रोग आदिक भी जाय नशाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।3।।

जो करे परिश्रम भी भारी, मेहनत बेकार जाए सारी।
जिन अर्चा करके पाय सफलता भाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।4।।

जो संक्लेशित हो रहते हैं, आँखों से आँसू बहते हैं।
उन जीवों ने भी अतिशय शांती पाई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।5।।

हम भक्त द्वार पर आए हैं, अरदास चरण में लाए हैं।
हे प्रभो ! आपकी फैली जग प्रभुताई।।
जीवों को शांति प्रदायी।।6।।

दोहा – नाथ ! आपके द्वार पर, होती पूरी आस।
आशा लेकर आए हम, करो पूर्ण अरदास।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्पांजलि करते चरण, पाने पुष्प पराग।
यही भावना है 'विशद', बुझे राग की आग।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा - शत् इन्द्रों से पूज्य हैं, जग के तारणहार।
कल्पतरु के पुष्प ले, पूजें मंगलकार।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ

(शम्भू छन्द)

शोक रहित हे नाथ ! आपका, तरु अशोक मन भाता है।
हं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति दिलाता है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अशोकतरु सत्प्रातिहार्य मंडिताय अशोकतरु युक्त शोभनपद प्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव पुष्पवृष्टि करते हैं, जो शिव के दर्शायक हैं।
भं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य मंडिताय सुरपुष्पवृष्टि शोभनपद प्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती है प्रभु की, मोह महातम क्षायक है।
मं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरते हैं सुर, ऋद्धिसिद्धि दर्शायक है।
रं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ चामरोज्ज्वल सत्प्रातिहार्य मंडिताय चामरढोरण प्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सप्त भयों से रहित प्रभू का, सिंहासन शिवदायक है।
घं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ सिंहासन सत्प्रातिहार्य मंडिताय सिंहासन प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भामण्डल शुभ सप्त भवों का, अतिशय जो दर्शायक है।
झं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ भामण्डल सत्प्रातिहार्य मंडिताय भामण्डल प्रातिहार्य शोभनपद प्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धीर मधुर गंभीर दुन्दुभि, नाद भी शांति प्रदायक है।
सं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ दुंदुभि सत्प्रातिहार्य मंडिताय दुंदुभिनाद शोभनपद प्रदाय स्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सोहें तीन छत्र प्रभु के सिर, तीन लोक दर्शायक हैं।
खं बीजाक्षर पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य मंडिताय छत्रत्रय शोभनपद प्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

ह भादिक पिण्डाक्षर पावन, अष्टकर्म के क्षायक हैं।
बीजाक्षर वसु पूज रहे हम, अतिशय शांति प्रदायक हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ अष्ट प्रातिहार्य मंडिताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - सिद्धों के गुण आठ हैं, शाश्वत रहे महान।
अष्टकर्म को नाशकर, पाएँ शिव सोपान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(सिद्धों के अष्ट गुणों के अर्घ्य)

(छन्द)

जो ज्ञान प्रकट ना होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
जो कर्म नाश कर प्रकट करे, वह केवलज्ञान प्रकाश रहा।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्म रहित अनंत ज्ञानयुक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।
नाश करे इसका जो साधक, केवल दर्शन प्राप्त करे।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्म रहित अनंत दर्शन गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

यह मोह महा दुखदाई है, इसने जग को भरमाया है।
जिनने इसको ठुकराया है, उनने समकित गुण पाया है।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहित अनंत सुख युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

यह अंतराय है कर्म घातिया, वीर्य सुगुण का नाशी है।
उसका घात किए जिन स्वामी, बल अनन्त की राशि है।।4।।

ॐ ह्रीं अंतराय कर्म रहित अनंत शक्ति युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुण्यकर्म वेदनीय के नाशी, जो अव्याबाध सुगुण पाए।
जो कर्माधीन सुखों को तजकर, निराबाध सुख उपजाए।।5।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहित अव्याबाध गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु आयु कर्म का नाश किए, फिर अवगाहन गुण उपजाए।
जो चतुर्गति से मुक्त हुए, अरु इस भव से मुक्ती पाए।।6।।

ॐ ह्रीं आयुकर्म रहित अवगाहनत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु गोत्र कर्म का नाश किए, फिर अगुरुलघु गुण उपजाए।
जो ऊँच नीच का भेद मैट, सिद्धों के अतिशय सुख पाए।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहित अगुरुलघुत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु नामकर्म का नाश किए, गुण शुभ सूक्ष्मत्व जगाए हैं।
अविकारी प्रभु हो गए अमूरत, सिद्धशिला को पाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहित सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अष्टकर्म के नाशी जिनवर, होते हैं आठों गुणवान।
भवि जीवों के लिए लोक में, अतिशयकारी क्षेम निधान।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहित अष्ट गुण युक्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा - शिवपथ के राही बनें, चउ आराधन वान।
अर्चा करते भाव से, जिन पद में धर ध्यान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(चार आराधना, चार कषाय रहित जिन के अर्घ्य)

देव शास्त्र गुरु के प्रति पच्चिस, दोष रहित हो सद् श्रद्धान।
यह सम्यक् दर्शन आराधन, करके पाएँ शिव सोपान।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन आराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शब्दाचार आदि वसु गुणयुत, ज्ञानाराधन रहा महान।
जिसके द्वारा जग के प्राणी, पाते वीतराग विज्ञान।

महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाराधना प्राप्त श्रीचिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विध चारित्र महान।
भावसहित पालन करने से, कर्मों का होवे अवशान।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्राराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

द्वादश विध तप करके होवे, अष्टकर्म का शीघ्र विनाश।
तप आराधन करके पाए, श्री जिनवर जी शिवपुर वास।।
महाराधना किए पूर्व में, अतः जगाए केवलज्ञान।
जगत पूज्य फिर हुए लोक में, कहलाए हैं प्रभु भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं सुतपाराधना प्राप्त श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

क्रोध कषाय उदय में होते, रह ना पाए सद् श्रद्धान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं क्रोध कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सम्यक्त्वी ना रह पाए जो, जिसके उदय में आए मान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।6।।

ॐ ह्रीं मान कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रत्नत्रय की घाती माया, होती है कहते विद्वान।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।7।।

ॐ ह्रीं माया कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

लोभ कषायवान जो प्राणी, कर ना पाते निज कल्याण।
नाश किए सम्यक्त्व प्रकट हो, पाए प्राणी केवल ज्ञान।।8।।

ॐ ह्रीं लोभ कषाय रहिताय श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चार कषाय विनाश करें जो, होवें चउ आराधन वान।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, प्राप्त करें वे पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं कषाय रहित आराधना सहित श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम-छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पंचकल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते हैं।।4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ति पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निजधाम बनाते हैं।।6।।

दोहा - यह संसार असार है, जान सके ना नाथ !।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा – चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।

चौपाई

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।

पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावती तब आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभू के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।36।।

पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।
'विशद' तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।।39।।
उभयलोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।40।।

दोहा - पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

संसार दशा

इस तन से जब प्राण पखेरू निकल के बाहर जावें।
पत्नी पुत्र सगे सम्बन्धी, कोई बचा न पावें।।1।।
करें विलाप स्वार्थ वश प्राणी, रोवें अश्रु बहावें।
घृत कपूर चन्दन आदिक से, चिता में तुझे जलावें।।2।।
मिट्टी का यह बना पींजड़ा, मिट्टी में मिल जावे।
बालक हो अज्ञान, जवानी पाकर के बौरावे।।3।।
वृद्ध अवस्था में आशाओं, की जो बढ़ती पावे।
काया जर्जर अर्ध मृतक सम, होकर के क्षय जावे।।4।।
अक्ल शक्ल शुभ देह मिली जो, वह भी न रह पावे।
आने जाने वाली श्वासें, जाने कब रुक जावें।।5।।
अतः आत्म हित करो 'विशद' यह, समय बीत न जावे।
कल छोड़ो पल में क्या हो यह, कोई जान न पावे।।6।।

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज – हम सब उतारें तेरी आरती......

आज करें हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारी–2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभु हैं, जग जन के संकटहारी।।
हो जिनवर, हम सब उतारें थारी आरती।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए–2।
अश्वसेन वामा देवी माँ–2, को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर.........।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए–2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर–2, नाचे हर्ष मनाए।।
हो जिनवर.........।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु सुगिरि पर, आके न्हवन कराए–2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई–2, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर.........।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए–2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ–2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर..........।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण–भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए–2।
'विशद' आपकी आरती करने–2, भक्त शरण में आए।।
हो जिनवर.........।।5।।